जब आपके पास किसी को दोष देने के कारण हों आपको क्या करना
चाहिए?

यह बहुत कम होता है कि कोई बिना वजह किसी के साथ झगड़ता है – आमतौर पर ऐसा ईर्ष्या के कारण होता है। लेकिन अक्सर गलतफहमी, शत्रुता, सुलह न होने की स्थिति या संघर्ष किसी ठोस कारण से उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए: किसी के साथ अन्याय हुआ, और पीड़ित उस अपराधी के प्रति घृणा महसूस करता है। या किसी ने परिवार के सदस्य की हत्या कर दी, जिससे जीवित बचे व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से नफरत उत्पन्न होती है। या कोई व्यक्ति किसी को अपमानित, नीचा दिखाता, बदनाम करता या मारता है – ये सभी “कारण” हैं जो प्रतिकूल भावना पैदा कर सकते हैं।

कभी-कभी ये कारण इतने गंभीर होते हैं कि हम साहस करके ईश्वर से कह सकते हैं: “हे प्रभु, मेरे पास इस व्यक्ति को दोष देने का कारण है – वह हत्यारा, धोखेबाज या जादूगर है।”

लेकिन ऐसी परिस्थितियों में बाइबल हमें क्या सिखाती है?

कुलुस्सियों 3:12-15 में लिखा है:

“इसलिए अब आप परमेश्वर की चुनी हुई जाति के रूप में, पवित्र
और प्रेमी, हृदय में दया, भलाई, नम्रता, कोमलता और धैर्य पहनें;
और एक दूसरे को सहन करें और यदि किसी के खिलाफ कोई शिकायत हो

तो उसे क्षमा करें; जैसे प्रभु ने आपको क्षमा किया है, वैसे
ही आप भी करें।
और सब बातों में प्रेम पहनें, जो पूर्णता का बंधन है।
और मसीह का शांति आपके हृदयों में राज करे, जिस हेतु आप एक
शरीर में बुलाए गए हैं; और कृतज्ञ रहें।”

विशेष रूप से verse 13 पर ध्यान दें: “यदि किसी के पास अपने पड़ोसी को दोष देने का कारण है…”
आपके पास माता-पिता को डांटने का उचित कारण हो सकता है क्योंकि उन्होंने आपको स्कूल नहीं भेजा, या अपने शिक्षकों या वरिष्ठों को उनकी जिम्मेदारियाँ निभाने में विफलता के कारण। लेकिन बाइबल कहती है: “जैसे प्रभु ने हमें क्षमा किया, वैसे ही हमें भी क्षमा करना चाहिए।”

कोई कह सकता है: “मैंने इस व्यक्ति की मदद की, और जब उसकी समस्याएँ दूर हो गईं, उसने मेरे बारे में बुरा बोलना शुरू कर दिया और मुझे जादूगर कहा।” ऐसे हालात में गुस्सा रखना मानवीय है – कारण समझ में आते हैं। लेकिन ईश्वर हमें यह सीखते हैं कि हमारी सही वजहों के बावजूद क्षमा करना चाहिए, जैसे उन्होंने हमें क्षमा किया।

यदि हम समझें कि हमारे दैनिक पापों के बावजूद भी ईश्वर के पास हमें न्याय करने के पर्याप्त कारण होते, फिर भी वह हमें

स्वतंत्र रूप से क्षमा करता है, तो हमें भी क्षमा करने में सक्षम होना चाहिए।

लूका 6:37 में लिखा है:

“निर्णय मत दीजिए, ताकि आप पर निर्णय न हो; क्षमा कीजिए, ताकि आपको क्षमा मिले।”

देखा? क्षमा करने से कई लाभ होते हैं, सबसे बड़ा लाभ है हृदय का आराम और अद्भुत आंतरिक शांति। लेकिन अगर हम रंज रखेंगे, तो याद रखें कि ईश्वर भी हमें दोष देने का कारण पा सकते हैं।

हमें इसे निरंतर सीखना होगा, क्योंकि जीवन कठिनाइयों से भरा है। अगर आज हमें क्षमा करने का अवसर नहीं मिलता, तो कल ऐसा अवसर मिलेगा। जो व्यक्ति हृदय में रंज रखता है, वह स्पष्ट संकेत देता है कि उसने स्वर्ग को नहीं पहचाना।

इसलिए, आइए हम सीखें क्षमा करना, भले ही हमारे पास क्षमा न करने के सभी कारण हों।

मत्ती 18:23-35 (दयालु नौकर की दृष्टांत) इस विषय को स्पष्ट

करता है:

“इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जो अपने नौकरों
से हिसाब करने वाला था।
जब वह हिसाब करने लगा, तो एक को लाया गया जो दस हजार तालेंट
का ऋणी था।
क्योंकि वह चुका नहीं सका, उसके स्वामी ने आदेश दिया कि उसे उसकी पत्नी, बच्चे और सब संपत्ति के साथ बेच दिया जाए, ताकि ऋण चुकाया जा सके।
नौकर ने गिरकर धैर्य माँगा और सब चुकाने का वचन दिया। परंतु स्वामी ने दया दिखाई, उसे मुक्त किया और ऋण माफ कर दिया।
लेकिन वही नौकर बाहर गया और अपने साथी नौकर से, जो उसे सौ दीनार का ऋणी था, क्रूरता से निपटा और उसे मार-पीट कर भुगतान की मांग की।
साथी नौकर ने उसके चरणों में गिरकर धैर्य माँगा, लेकिन उसने क्षमा नहीं किया और उसे जेल में डाल दिया।
जब दूसरों ने यह देखा, तो उन्होंने सब कुछ स्वामी को बताया। तब स्वामी ने उसे बुलाया और कहा, ‘दुष्ट नौकर, मैंने जो ऋण तुझसे चुका दिया, उसे तुझ पर माफ कर दिया। क्या तुझे भी अपने साथी नौकर के प्रति दया नहीं करनी चाहिए थी?’
तब स्वामी क्रोधित हुआ और उसे यातनाकारों के हवाले कर दिया, जब तक कि सब भुगतान न हो जाए।
इसी प्रकार मेरा स्वर्गीय पिता भी तुम पर कार्य करेगा यदि तुम दिल से अपने प्रत्येक भाई को क्षमा न करो।”

प्रभु आपका कल्याण करें।

कृपया इस शुभ संदेश को दूसरों के साथ साझा करें। यदि आप चाहें, तो हम आपको ये शिक्षा ईमेल या WhatsApp के माध्यम से भी भेज सकते हैं। इसके लिए हमें कमेंट बॉक्स के माध्यम से संदेश भेजें या इस नंबर पर कॉल करें: +255 789001312।

Share on:
WhatsApp